

रविवार 13 अप्रैल, 2025

विषय— क्या पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक हैं?

स्वर्ण पाठ: याकूब 5: 15

"और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठा कर खड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 103: 1-4
प्रेरितों के काम 19: 11, 12

- ¹ हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
- ² हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
- ³ वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है।
- ⁴ वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता है।
- ¹¹ और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ्य के अनोखे काम दिखाता था।
- ¹² यहां तक कि रूमाल और अंगोछे उस की देह से छुलवाकर बीमारों पर डालते थे, और उन की बीमारियां जाती रहती थी; और दुष्टात्माएं उन में से निकल जाया करती थीं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. लूका 19: 1-10

- ¹ वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था।
- ² और देखो, ज़क़ई नाम एक मनुष्य था जो चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था।
- ³ वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था।
- ⁴ तब उस को देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था।

- 5 जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि कर के उस से कहा; हे ज़क़ई झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।
- 6 वह तुरन्त उतर कर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया।
- 7 यह देख कर सब लोगे कुड़कुड़ा कर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है।
- 8 ज़क़ई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं।
- 9 तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है।
- 10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुएों को ढूंढने और उन का उद्धार करने आया है॥

2. मरकुस 1: 29-39

- 29 और वह तुरन्त आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर आया।
- 30 और शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी, और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उस से कहा।
- 31 तब उस ने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्वर उस पर से उतर गया, और वह उन की सेवा-टहल करने लगी॥
- 32 सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें जिन में दुष्टात्माएं थीं उसके पास लाए।
- 33 और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ।
- 34 और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला; और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं॥
- 35 और भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।
- 36 तब शमौन और उसके साथी उस की खोज में गए।
- 37 जब वह मिला, तो उस से कहा; कि सब लोग तुझे ढूंढ रहे हैं।
- 38 उस ने उन से कहा, आओ; हम और कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं।
- 39 सो वह सारे गलील में उन की सभाओं में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा॥

3. मत्ती 10: 1, 5-8

- 1 फिर उस ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें॥

- 5 इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा कि अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना।
- 6 परन्तु इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।
- 7 और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
- 8 बीमारों को चंगा करो: मरे हुएों को जिलाओ: कोढ़ियों को शुद्ध करो: दुष्टात्माओं को निकालो: तुम ने सेंटमेंत पाया है, सेंटमेंत दो।

4. प्रेरितों के काम 20: 7-10

- 7 सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।
- 8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीये जल रहे थे।
- 9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
- 10 परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।

5. रोमियो 6: 12-23

- 12 इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो।
- 13 और न अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुएों में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।
- 14 और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो॥
- 15 तो क्या हुआ क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हैं? कदापि नहीं।
- 16 क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाई सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है।
- 17 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे।
- 18 और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।

- 19 मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूँ, जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो।
- 20 जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे।
- 21 सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उन से उस समय तुम क्या फल पाते थे?
- 22 क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।
- 23 क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥

6. मत्ती 5: 48

- 48 इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 475: 28 (आदमी)-29 (से)

मनुष्य पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए अक्षम है। वास्तविक मनुष्य पवित्रता से विदा नहीं कर सकता,

2. 26: 14-18

ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम ने पाप, बीमारी और मृत्यु पर यीशु को अधिकार दिया। उनका मिशन आकाशीय विज्ञान को प्रकट करना था, यह साबित करने के लिए कि ईश्वर क्या है और वह मनुष्य के लिए क्या करता है।

3. 205: 7-13

विश्वास करने की यह त्रुटि कब सामने आएगी कि भौतिकता में जीवन है, और यह पाप, बीमारी और मृत्यु ईश्वर की रचनाएँ हैं? यह कब समझा जाएगा कि सामग्री में न तो बुद्धिमत्ता है, जीवन है, न ही संवेदना है, और यह कि विपरीत विश्वास सभी दुखों का विपुल स्रोत है? ईश्वर ने मन के माध्यम से सब कुछ बनाया, और सभी को पूर्ण और शाश्वत बनाया।

4. 207: 20 (वहाँ)-26

इसके एक कारण और भी हैं। इसलिए किसी अन्य कारण से कोई प्रभाव नहीं हो सकता है, और औकात में कोई वास्तविकता नहीं हो सकती है जो इस महान और एकमात्र कारण से आगे नहीं बढ़ती है। पाप, बीमारी, बीमारी और मृत्यु विज्ञान के नहीं होने के हैं। वे त्रुटियां हैं, जो सत्य, जीवन या प्रेम की अनुपस्थिति को रोकती हैं।

5. 343: 14-20

यीशु त्रुटि से सब छीन लेता है, जब उसकी शिक्षाओं को पूरी तरह से समझा जाता है। दृष्टांत और तर्क से वह अच्छे उत्पादक बुराई की असंभवता की व्याख्या करता है; और वह वैज्ञानिक रूप से इस महान तथ्य को प्रदर्शित करता है, जो यह साबित करता है कि गलत तरीके से चमत्कार कहा जाता है, कि पाप, बीमारी, और मृत्यु विश्वास हैं - भ्रमपूर्ण त्रुटियां - जिसे वह नष्ट कर सकता था और नष्ट कर सकता था।

6. 259: 6 (में)-21

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

यदि मनुष्य एक बार परिपूर्ण था, लेकिन अब अपनी पूर्णता खो चुका है, तब मनुष्यों ने ईश्वर की प्रतिवर्त छवि को कभी नहीं माना। खोई हुई छवि कोई छवि नहीं है। सच्ची समानता दिव्य प्रतिबिंब में खो नहीं सकती। इसे समझते हुए, यीशु ने कहा: "इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है"॥

7. 480: 19 (दोबारा)-6

परमेश्वर, या अच्छाई ने कभी भी मनुष्य को पाप करने के योग्य नहीं बनाया। यह अच्छाई के विपरीत है - यानी बुराई - जो पुरुषों को गलत काम करने में सक्षम बनाती है। इसलिए, बुराई केवल एक भ्रम है, और इसका कोई वास्तविक आधार नहीं है। बुराई एक मिथ्या विश्वास है। ईश्वर इसका रचयिता नहीं है। बुराई का काल्पनिक माता-पिता झूठ है।

बाइबिल घोषित करता है: "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ [दिव्य शब्द]; और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" यह ईश्वरीय विज्ञान की शाश्वत सत्यता है। यदि पाप, बीमारी, और मृत्यु को कुछ भी नहीं समझा जाता, तो वे गायब हो जाते। जैसे सूरज से पहले वाष्प पिघलती है, वैसे ही अच्छाई की वास्तविकता से पहले बुराई गायब हो जाएगी। एक को दूसरे को छिपाना चाहिए। कितना महत्वपूर्ण है, फिर, वास्तविकता के रूप में अच्छा चुनना! मनुष्य ईश्वर, आत्मा, और कुछ नहीं के लिए सहायक है। ईश्वर का होना अनंत, स्वतंत्रता, सद्भाव और असीम आनंद है। "और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां

स्वतंत्रता है।" योर के द्वीपसमूह की तरह, मनुष्य स्वतंत्र है "पवित्रतम में प्रवेश करने के लिए," - भगवान का क्षेत्र।

8. 417: 20-26

क्रिश्चियन साइंस हीलर के लिए, बीमारी एक सपना है जिसमें से रोगी को जागृत करने की आवश्यकता होती है। रोग चिकित्सक को वास्तविक नहीं दिखना चाहिए, क्योंकि यह प्रदर्शन है कि रोगी को ठीक करने का तरीका उसके लिए बीमारी को असत्य बनाना है। ऐसा करने के लिए, चिकित्सक को विज्ञान में रोग की असत्यता को समझना चाहिए।

9. 396: 26-32

यह स्पष्ट रूप से ध्यान में रखें कि मनुष्य ईश्वर की संतान है, मनुष्य की नहीं; मनुष्य आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं; आत्मा आत्मा है, पदार्थ से बाहर, पदार्थ के अन्दर कभी नहीं, शरीर को कभी जीवन और संवेदना नहीं देती। यह समझना रोग के स्वप्न को तोड़ देता है कि रोग मानव मन द्वारा निर्मित होता है, न कि पदार्थ या दैवीय मन द्वारा।

10. 353: 1-24

ईसाई वैज्ञानिक वास्तविक कामुक असत्य है। पाप, रोग, और जो कुछ भी भौतिक अर्थों में वास्तविक लगता है, वह दिव्य विज्ञान में असत्य है। भौतिक इंद्रियां और विज्ञान हमेशा से विरोधी रहे हैं, और वे तब तक जारी रहेंगे, जब तक कि भौतिक इंद्रियों की गवाही पूरी तरह से क्रायश्चियन साइंस को नहीं मिलती।

एक ईसाई, जिसके पास सत्य का अधिक सशक्त प्रमाण है, जो त्रुटि के प्रमाण का खंडन करता है, वह त्रुटि को वास्तविक या सच्चा कैसे मान सकता है, चाहे वह बीमारी के रूप में हो या पाप के रूप में? सभी को यह स्वीकार करना होगा कि मसीह ही "मार्ग, सत्य और जीवन" है, तथा सर्वशक्तिमान सत्य निश्चित रूप से त्रुटि का नाश करता है।

इस युग ने भूतों की मान्यताओं की पूरी तरह से व्याख्या नहीं की है। यह अभी भी उन्हें बहुत कम समझता है। समय अभी तक अनंतता, अमरता, पूर्ण वास्तविकता तक नहीं पहुंचा है। सभी वास्तविक शाश्वत हैं। पूर्णता वास्तविकता को रेखांकित करती है। पूर्णता के बिना, कुछ भी पूर्ण वास्तविक नहीं है। सभी चीजें गायब होती रहेंगी, जब तक पूर्णता प्रकट न हो जाए और वास्तविकता सामने न आ जाए। हमें सभी जगहों पर भूतों के बारे में विचार छोड़ना चाहिए। हमें अंधविश्वास के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करना चाहिए, लेकिन हमें इसमें सभी विश्वास पैदा करना चाहिए और बुद्धिमान होना चाहिए। जब हमें पता चलता है कि त्रुटि वास्तविक नहीं है, तो हम प्रगति के लिए तैयार होंगे, "कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर।"

11. 476: 32-4

यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण ने बीमारों को चंगा किया।

12. 248: 26-32

हमें विचार में आदर्श मॉडल बनाना चाहिए और उन्हें लगातार देखना चाहिए, या हम उन्हें भव्य और महान जीवन में कभी नहीं उकेरेंगे। निःस्वार्थता, अच्छाई, दया, न्याय, स्वास्थ्य, पवित्रता, प्रेम - स्वर्ग का राज्य - हमारे भीतर राज करो, और पाप, बीमारी, और मृत्यु तब तक कम हो जाएगी जब तक वे अंततः गायब नहीं हो जाते।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा

करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6